डॉ. मधु भट्ट तैलंग
(राजस्थान की प्रथम
ध्रुवपद–गायिका)
भूतपूर्व डीन, ललित कला संकाय,
भूतपूर्व विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

पता :
पुत्री पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग
'ध्रुवपद विशेषज्ञ'
118–ए, 'रसमंजरी', गेटोर रोड़,
ब्रह्मपुरी, जयपुर (राजस्थान)
मोबाईल : 94143–36936, 9928277833
e-mail: madhu_bhatttailang@yahoo.com

दिनांक : 13.07.2921

ध्रुवपद–गायिका **डॉ. मधु भट्ट तैलंग** की पुस्तक **''भारतीय ललित कलाएँ : समसमायिक अनुशीलन''** प्रकाशित एवं विमोचित

वरिष्ठ ध्रुवपद–गायिका, ललित कला संकाय, राज. विश्वविद्यालय की पूर्व डीन एवं संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय की पूर्व विभागाध्यक्षा डॉ. मधु भट्ट तैलंग द्वारा संपादित हाल ही में वर्ष 2021 में प्रकाशित पुस्तक **''भारतीय ललित कलाएँ : समसमायिक अनुशीलन''** दिल्ली के प्रतिष्ठित प्रकाशन कनिष्क पब्लिशिंग हाउस से रिलीज हुई है। इस पुस्तक की प्रधान सम्पादक स्वयं डॉ. भट्ट हैं एवं उनके साथ इसका सहसंपादन सेंट विल्फ्रेड कॉलेज, जयपुर के संगीत विभागाध्यक्ष डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा एवं संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर श्री मोहन लाल ने किया है। इस पुस्तक में 38 आलेख देश–विदेश के प्रतिष्ठित संगीत प्रोफेसर्स, संगीत चिंतक एवं संगीत से जुड़े विभिन्न नामचीन महानुभावों द्वारा लिखे गये हैं। इसकी अनुशंसा पुस्तक के प्रारंभ में कुछ कला–संस्कृति एवं शिक्षा से जुड़ी नामचीन हस्तियों द्वारा की गई है जिसमें गण्यमान हैं – सुविख्यात ध्रुवपदाचार्य पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग, माननीय कला एवं संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, माननीय कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय, प्रो. राजीव जैन, सीनेट सदस्य अधिवक्ता डॉ. अखिल शुक्ला एवं अधिष्ठाता ललित कला संकाय राजस्थान विश्वविद्यालय डॉ. बीना जैन।

पुस्तक का प्रतिपाद्य विषय **''भारतीय ललित कलाएँ : समसमायिक अनुशीलन''** वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूर्ण प्रासंगिकता लिए हुए है क्योंकि इस पुस्तक में वर्तमान में संगीत के व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक में होने वाले अनेक परिवर्तनों,

नवीन प्रयोगों, नये सृजनों, नवीन रचनाओं एवं नवाचारों आदि को बखूबी सम्मिलित किया गया है, जो कि संगीत– क्षेत्र के हर साधक के लिए अत्यंत उपयोगी, अनुकरणीय एवं प्रेरक होंगे।

यदि वस्तुतः देखा जाये तो ललित कलाओं विशेषकर संगीत की परम्परागतता और उसके प्रयोगों में आये विविध शास्त्रीय अथवा सैद्धान्तिक परिवर्तनों एवं विकासों के पीछे एकमात्र एवं सबसे अहम् कारण उसका दायरा विश्व स्तर तक फैलना एवं उसकी युगानुकूलता अथवा समसामयिकता ही है। लोक से देश एवं विदेशी संस्कृतियों एवं सभ्यताओं ने कलासाधकों को समय–समय पर अपने प्रभाव में लेकर उन्हें नयी–नयी सर्जनाओं के लिए प्रेरित किया। ''देशदेशेजनरुच्यानाम्'' के अनुसार प्रत्येक देश–काल का परिवेश एवं तत्कालीन जनरूचि ने उसे हर युग में समसामयिकता प्रदान की एवं वह मनुष्य के संवेगों की भाषा बनकर उसे प्रासंगिकता प्रदान करती रही।

इस पुस्तक का विमोचन माननीय कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय प्रो. राजीव जैन द्वारा 31 मार्च, 2021 को सीनेट हाल में संपन्न हो चुका है। इस पुस्तक की कीमत कुल 1100/– रूपये निर्धारित की गई है एवं यह अमेजोन पर भी उपलब्ध है।

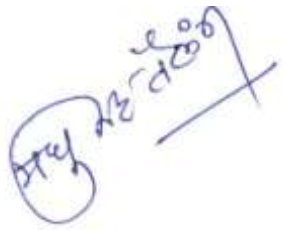

डॉ. मधु भट्ट तैलंग

University of Rajasthan
Jaipur

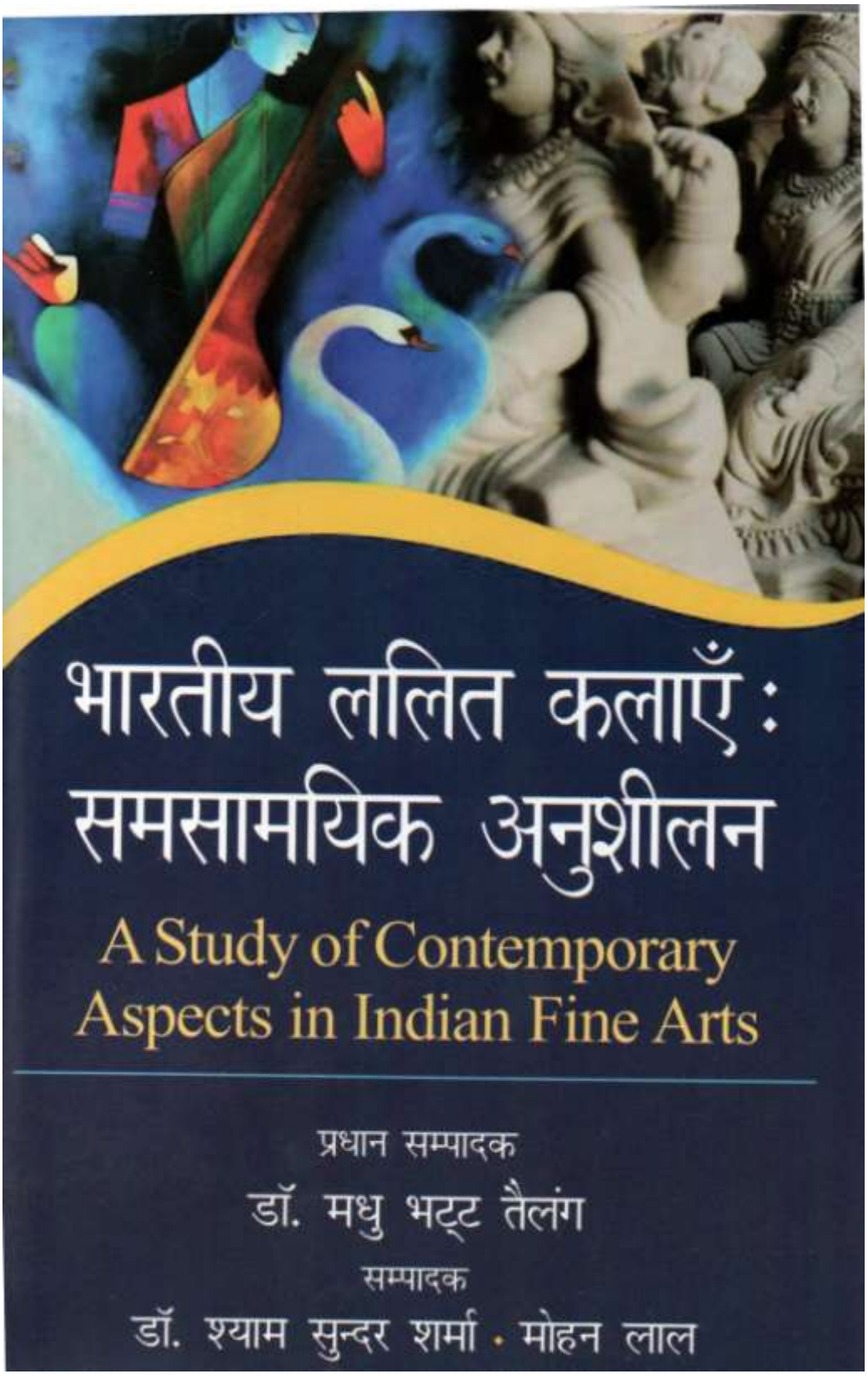
भारतीय ललित कलाएँ :
समसामयिक अनुशीलन
A Study of Contemporary
Aspects in Indian Fine Arts
प्रधान सम्पादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग
सम्पादक
डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा • मोहन लाल

डॉ. मधु भट्ट तैलंग, जयपुर की स्थायी निवासी, आपका जन्म 28 मार्च, 1961, जयपुर में। अपने पिता एवं गुरु विख्यात ध्रुवपदाचार्य एवं वाग्गेयकार पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग से ख्याल एवं ध्रुवपद की गहन घरानेदार तालीम।

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी-संगीत) प्रथम श्रेणी, गोल्ड मेडलिस्ट एवं पीएच.डी.।

सृजन : राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में पिछले 40 वर्षों से सतत् आलेख प्रकाशित।

प्रकाशित कृतियां: 1. ध्रुपद-गायन-परम्परा, 2. हिन्दुस्तानी संगीत के पखावज-वादन को वल्लभ सम्प्रदाय की देन।

सम्पादन : 'ध्रुवावाणी' पत्रिका जयपुर का 20 वर्षों से सम्पादन, 'कला-शिक्षा और भावी परिप्रेक्ष्य', 'ललित कलाओं में सृजनात्मकता', 'संगीत और नवाचार', 'पंचाशिका संगीत विमल मंजरी' पुस्तकों का सम्पादन एवं भोपाल से प्रकाशित 'कला-समय' पत्रिका की उप-सम्पादक।

विशिष्ट : राजस्थान की प्रथम व एकमात्र ध्रुवपद- गायिका। आकाशवाणी-दूरदर्शन की ध्रुवपद गायकी की 'ए' ग्रेड कलाकार। आई.सी.सी.आर., विदेश मंत्रालय के उत्कृष्ट कलाकारों के पैनल में शामिल। पिछले 40 वर्षों से भारत के लगभग सभी प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संगीत-समारोहों सहित यू.एस.ए. जर्मनी एवं स्वीडन आदि 20 विदेशी शहरों के अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों, सेमिनारों व कार्यशालाओं में पत्र-वाचन, प्रशिक्षण एवं विविध प्रस्तुतियां। अक्टूबर 2018 को विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित स्वीडन में ध्रुवपद-गायकी का प्रदर्शन। यू.जी.सी.; संगीत नाटक अकादमी, राजस्थान एवं दिल्ली; कला-संस्कृति मंत्रालय से 7 राष्ट्रीय छात्रवृत्तियां एवं फैलोशिप प्राप्त। देश के अनेक विश्वविद्यालयों की बी.ओ.एस. (पाठ्यक्रम समिति) सहित विविध सांस्कृतिक एवं अकादमिक, संस्थाओं की सदस्य। 50 से अधिक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान। इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट एवं रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र, जयपुर की मानद् सचिव। संगीत विभाग, राज. विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर। राजस्थान विश्वविद्यालय के 3 दर्जन विद्यार्थियों को शोध-निर्देशन। भूतपूर्व अधिष्ठाता, ललित कला संकाय एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के रूप में उल्लेखनीय कार्य।

₹ 1100

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4695/5-21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
फोन: 2327 0497, 2328 8285
E-mail: kanishkabooks@gmail.com
kanishka_publishing@yahoo.co.in

ISBN 978-81-950394-5-6
9788195039456